Tc.No. : GUJHIN00722

पेज: 4, मुल्य 1 रु.

क्रांति समय

संस्थापक / संपादक : सुरेश मौर्या

E-mail: krantisamay@gmail.com, www.krantisamay.com

वर्ष: 1 अंक: 06 , 27 सितम्बर, बुधवार 2017, सूरत, हिन्दी दैनिक 9879141480 4 ओ ब्लॉक आगम नवकार कॉम्पलेक्ष, सचीन रेल्वे स्टेशन के पास, सूरत-गुजरात

सार समाचार

ऑनलाइन हुई पहली से आठवीं कक्षा तक की किताबें

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के प्राथमिक स्कूलों में किताबों की कमी की वजह से अब पहली से आठवीं कक्षा तक के विद्यार्थियों की पढ़ाई में कोई परेशानी नहीं आएगी। अब महज एक क्लिक से सरकारी स्कूलों के शिक्षक बच्चों को पढ़ा सकेंगे। इसके लिए राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (एससीईआरटी) ने अपनी किताबों का डिजिटाइजेशन कराकर ई-बुक तैयार किया हैऔर इसे अपनी वेबसाइट www.scertup.co.in पर अपलोड कर दिया है। इस वेबसाइट से विद्यार्थी अब सीधे किताबें पढ़ सकेंगे। सर्व शिक्षा अभियान के संयुक्त निदेशक अजय कुमार सिंह के कहा कि ज्यादातर शिक्षक स्मार्ट फोन का इस्तेमाल करते हैं। जहां भी किताबें नहीं पहुंच पा रही हैं वहां शिक्षक बच्चों को वेबसाइट से किताबें डाउनलोड कर आसानी से उनका कोर्स पूरा करा सकेंगे। इससे प्रदेश भर के परिषदीय स्कूल, राजकीय सहायता प्राप्त और अनुदानित मदरसों में कक्षा एक से आठ तक के करीब एक करोड़ 70 लाख विद्यार्थियों की पढ़ाई प्रभावित नहीं होगी। उन्होंने बताया कि कई जगह से शिकायतें मिलने के बाद एससीईआरटी ने अब यह अहम कदम उठाया है। इससे संबंधित सर्कुलर सभी मंडलीय सहायक शिक्षा निर्देशक, डायट प्राचार्य और बेसिक शिक्षा अधिकारियों को भेज दिया गया है।

महंत सियाराम दास यौन उत्पीड़न में गिरफ्तार, महंत के स्कूल की प्रबंधिका पर भी केस

सीतापुर। आशाराम, बाबा राम रहीम और फलाहारी बाबा के बाद अब विश्व प्रसिद्ध चक्रतीर्थ नैमिषारण्य के कथित महंत सियाराम दास दुष्कर्म के आरोप में फंस गए हैं। सोमवार देर रात जिले के रामपुर कलां थाना क्षेत्र की एक युवती की शिकायत पर पुलिस ने सियाराम दास व उसके स्कूलों की प्रबंधिका रिंटू सिंह के खिलाफ केस दर्ज किया। सियाराम दास को गिरफ्तार कर लिया गया है, जबकि रिंटू सिंह फरार है। सियारामदास कान्वेन्ट स्कूल, एक इंटर कालेज और एक ला कालेज का स्वामी है। ला कालेज का उद्घाटन सन 2015 में हुआ था। मिश्रिख के पुलिस क्षेत्राधिकारी राधारमण सिंह ने बताया कि सोमवार देर रात युवती ने यूपी डायल 100 पुलिस को मामले की सूचना दी। पुलिस सियाराम दास को उसके आवास से युवती के साथ पकड़ कर थाने लाई। प्रथम दृष्टया युवती के आरोप सही पाए गए हैं। पुलिस के मुताबिक सियाराम दास व उसके स्कूलों की प्रबंधिका के खिलाफ दुष्कर्म और एससी-एसटी की धाराओं में केस दर्ज कर लिया गया है। सीओ ने बताया कि कथित बाबा सियाराम दास को गिरफ्तार कर लिया गया है, जबकि प्रबंधिका रिंटू सिंह की तलाश की जा रही है। सियाराम दास मिश्रिख कस्बे में कक्षा आठ तक एक इंगलिश मीडियम स्कूल, एक इंटर कालेज और एक ला कालेज चला रहा है। वह एक डिग्री कालेज खोलने की तैयारी कर रहा था।

उकसाकर धरने पर बैठाया, कुलपति से न मिलने की दी धमकी

वाराणसी। बीएचयू में छेड़खानी की पीड़ित छात्रा ने कुलपति प्रो. जीसी त्रिपाठी से मुलाकात कर बताया कि उसे लोगों ने उकसाकर धरने पर बैठाया। छात्रा ने कहा कि जब उसे यह समझ में आया कि इस मामले के जरिए बीएचयू और छात्रों को अराजक तत्वों ने हाईजैक कर लिया है, धरने का विरोध किया। छात्रा ने यह भी आरोप लगाया कि कुछ बाहरी तत्वों ने धमकाया कि यदि कुलपति से मिली तो अंजाम अच्छा नहीं होगा। बीएचयू प्रशासन ने यह दावा किया है कि छेड़खानी की घटना के दूसरे दिन 22 सितम्बर को पीड़िता ने साथी छात्राओं के साथ कुलपति से मुलाकात कर धरने का बॉयकाट कर दिया। कुलपति से मिलने के बाद छात्रा धरने पर नहीं लौटी। छात्रा के कहने पर ही कुलपति त्रिवेणी संकुल में अन्य छात्राओं से मिलने पहुंचे, जहां विरोधी गुट ने सड़क पर ही बात करने का दबाव बनाया। कुलपति ने कहा कि बात सड़क पर नहीं छात्रवास के भीतर होगी। इसके बाद उपद्रवियों ने पत्थरबाजी शुरू कर दी। जिसके कारण कुलपति को लौटना पड़ा। धरने के दौरान छात्राओं के तीन प्रतिनिधि मंडल ने मुलाकात की।

कहा-बवाल के लिए प्रबंधन जिम्मेदार

बीएचयू हिंसा: वाराणसी कमिश्नर ने मुख्य सचिव को सौंपी रिपोर्ट

वाराणसी। बीएचयू कैंपस में छेड़खानी के विरोध में तीन दिन से हो रहे बवाल की न्यायिक जांच की मांग को मंजूरी मिल गई है। लेकिन वीसी ने छात्राओं पर हुए लाठीचार्ज के आरोपों को सिरे से खारिज करते हुए इस आंदोलन को आम बताया है। इधर, कमिश्नर की रिपोर्ट में इस पूरे बवाल के लिए प्रबंधन की लापरवाही की बात कही है। वाराणसी के कमिश्नर नितिन गोकर्न ने मुख्य सचिव राजीव कुमार को रिपोर्ट सौंप दी है। उन्होंने इस पूरे बवाल के लिए विश्वविद्यालय के प्रबंधन को जिम्मेदार ठहराया है। रिपोर्ट में साफ कहा है कि प्रबंधन ने संवेदनशील तरीके से इस मामले को काबू नहीं किया, समय पर सही फैसले नहीं लिए, इसलिए ये हालात पैदा हुए हैं। कुलपति प्रो. गिरीश चन्द्र त्रिपाठी ने कहा है कि परिसर में छात्राओं पर लाठीचार्ज नहीं हुआ है। कार्रवाई उनपर की गई है जो विश्वविद्यालय की संपत्ति को आग लगा रहे थे। पेट्रोल बम फेंक रहे थे, पत्थरबाजी कर रहे थे। किसी भी बेकसूर छात्रा पर कोई कार्रवाई नहीं की गई। इसका एक भी प्रमाण नहीं है। इधर, कांग्रेस ने वीसी को हटाए जाने की मांग की है और सोमवार को दिल्ली में हुई बीजेपी की कार्यकारिणी की बैठक में अमित शाह और प्रधानमंत्री ने इस पूरे मामले पर गंभीर संज्ञान लिया। वीसी ने कहा कि 23 सितम्बर की रात को लगभग 8:30 बजे जब मैं अपनी छात्राओं से मिलने त्रिवेणी छात्रावास जा रहा था उस समय अराजकतत्वों ने मुझे रोक कर आगजनी एवं पत्थरबाजी शुरु किया। कुलपति ने कहा कि पीड़ित छात्रा और उसकी सहेलियों के साथ उन्होंने दो बार मुलाकात की। छात्राओं ने उन्हें बताया था कि धरने का संचालन खतरनाक किस्म के अपरिचित लोग कर रहे हैं। उन लोगों ने पीड़ित छात्रा को धरना स्थल पर बंधक बना कर जबरन बिठाए रखा था। पुलिस ने ऐसे तत्वों को कैंपस से बाहर करने के लिये ही बल प्रयोग किया।

उकसाकर धरने पर बैठाया, कुलपति से न मिलने की दी धमकी

बीएचयू में छेड़खानी की पीड़ित छात्रा ने कुलपति प्रो. जीसी त्रिपाठी से मुलाकात कर बताया कि उसे लोगों ने उकसाकर धरने पर बैठाया। छात्रा ने कहा कि जब उसे यह समझ में आया कि इस मामले के जरिए बीएचयू और छात्रों को अराजक तत्वों ने हाईजैक कर लिया है, धरने का विरोध किया। छात्रा ने यह भी आरोप लगाया कि कुछ बाहरी तत्वों ने धमकाया कि यदि कुलपति से मिली तो अंजाम अच्छा नहीं होगा। बीएचयू प्रशासन ने यह दावा किया है कि छेड़खानी की घटना के दूसरे दिन 22 सितम्बर को पीड़िता ने साथी छात्राओं के साथ कुलपति से मुलाकात कर धरने का बॉयकाट कर दिया। कुलपति से मिलने के बाद छात्रा धरने पर नहीं लौटी। छात्रा के कहने पर ही कुलपति त्रिवेणी संकुल में अन्य छात्राओं से मिलने पहुंचे, जहां विरोधी गुट ने सड़क पर ही बात करने का दबाव बनाया। कुलपति ने कहा कि बात सड़क पर नहीं छात्रवास के भीतर होगी। इसके बाद उपद्रवियों ने पत्थरबाजी शुरू कर दी। जिसके कारण कुलपति को लौटना पड़ा। धरने के दौरान छात्राओं के तीन प्रतिनिधि मंडल ने मुलाकात की।

सामने आई हकीकत, पहले भी छात्रा मुंडवा चुकी है सिर

इसमें त्रिवेणी संकुल की छात्राओं के साथ महिला महाविद्यालय की 25 छात्राएं शामिल थीं। इस बात की भनक जब मुख्यद्वार पर उपद्रवियों को लगी तो, कुलपति आवास पर धावा बोल दिया। कुलपति व छात्राओं के बीच चल रही वार्ता बंद कराई और यह संदेश दिया कि कुलपति ने मिलने से इनकार कर दिया है, जिससे आन्दोलन अनियंत्रित हो गया।

बीएचयू में बवाल की न्यायिक जांच होगी

बीएचयू प्रशासन ने परिसर में 22 और 23 सितंबर की घटना की न्यायिक जांच कराने का फैसला किया है। इलाहाबाद उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश वीके दीक्षित की अध्यक्षता में जांच समिति गठित की गई है।

विश्वविद्यालय में 65 और संवेदनशील स्थलों को चिन्हित किया गया है, जहां सीसीटीवी कैमरे स्थापित होंगे। प्रथम चरण में विश्वविद्यालय के द्वार और महिला छात्रावास पर इन्हें लगाने की प्रक्रिया शुरू हो गई है। सुरक्षा तंत्र में महिला सुरक्षाकर्मियों को भी शामिल किया जा रहा है। अर्न व्हाइल लर्न की योजना के अंतर्गत शारीरिक शिक्षा विभाग एवं स्पोर्ट्स बोर्ड की सीनियर छात्राओं को महिला छात्रावासों की सुरक्षा व्यवस्था में लगाया जा रहा है। महिला छात्रावासों में महिला सुरक्षाकर्मी तैनात किए जाने का निर्देश दिया गया है। महिला छात्रावासों के आसपास के मार्गों पर वाहनों के प्रतिबंधात्मक प्रवेश की व्यवस्था होगी। खराब स्ट्रीट लाइट को ठीक करा कर अतिरिक्त स्ट्रीट लाइटें लगाई जाएंगी। सुव्यवस्थित सुरक्षा योजना बनाई जा रही है, जिसमें सुझाव के लिए वरिष्ठ छात्राओं को शामिल किया जाएगा। महिला छात्रावासों के स्तर पर छात्राओं के प्रतिनिधि को भी शामिल किए जाने का निर्णय किया गया है।

सद्गुरु और सीएम ने किया नदियों को बचाने का आह्वान

लखनऊ। नदी अभियान का 16वां पड़ाव मंगलवार को लखनऊ में था। डॉ. अंबेडकर ऑडिटोरियम में आयोजित इस कार्यक्रम में नदी अभियान पर कन्याकुमारी से हिमालय तक के लिए निकले सद्गुरु वासुदेव जग्गी ने कहा कि हमें अगली पीढ़ी को 50 साल पुराना (प्लानेट) धरती देना होगा। इसके लिए सरकार ठोस नीति बनाए, ताकि आगामी 20-25 सालों तक जो भी सरकारें बनें उसी नीति पर काम करें। वहीं मुख्यमंत्री योगी आदित्य नाथ ने अभियान को प्रदेश सरकार की तरफ से पूरा सहयोग देने की बात कही। उन्होंने कहा कि प्रयाग अर्द्धकुंभ 2019 से पहले ही गंगा में नालों और कचरे का जाना पूरी तरह बंद कर दिया जाएगा। इस कार्ययोजना पर काम हो रहा है। दोनों ने नदियों को बचाने के इस अभियान जनता से जुड़ने का आह्वान किया।

नदियों को बचाना सृष्टि को बचाने का यज्ञ है : योगी

नदी अभियान परिचर्चा मे मुख्यमंत्री योगी आदित्य नाथ ने कहा कि नदियों की सफाई और नदियों को बचाने के लिए प्रदेश सरकार प्रतिबद्ध है। यह सृष्टि को बचाने का यज्ञ है। शासन के साथ ही इस काम में जन भागीदारी जरूरी है। 2019 में प्रयागराज में कुंभ का आगाज होगा। यहां गंगा-जमुना-सरस्वती का संगम है। सरस्वती नदी अब अपने मूल रूप में नहीं है जैसा की पौराणिक काल में थी। दक्षिण भारत में कावेरी नदी के साथ ही उत्तर भारत की तमाम नदियां लगभग सूख गई हैं। सृष्टि के लिए यह चुनौती है। हमारे वैज्ञानिक सोच ने यह स्थिति पैदा की है। इसने हमें मैं और मेरा तक की संकुचित सोच दी। लखनऊ में गोमती, दिल्ली में यमुना और कानपुर में गंगा की दुर्दशा हुई।

मुख्यमंत्री ने कहा कि नदियों को बचाने के लिए प्रदेश सरकार ने कार्यक्रम लागू कर दिया है। लखनऊ के 36 नालों के पानी के पानी के ट्रीटमेंट के लिए सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट (एसटीपी) लगाए जाएंगे। प्रदेश में पीलीभीत से लेकर लखनऊ तक गंगा के लिए कार्ययोजना तैयार है। उन्होंने बताया कि प्रदेश में गंगा किनारे के 1627 गांवों को खुले में शौच से मुक्त कर दिया गया है। महानगरों में काम हो रहा है। गंगा में जाने वाली गंदगी को साफ करने के लिए गंगा किनारे 39 एसटीपी लगाए जाएंगे। दावा किया कि प्रयाग अर्द्धकुंभ से पहले ही गंगा में एक भी नाला या कचरा नहीं जाएगा ऐसा प्रबंध कर दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि वन महोत्सव के दौरान गंगा किनारे 1.30 करोड़ पौधे लगाए गए। पूरे प्रदेश में छह करोड़ पौधे रोपित किए गए। यूकेलिप्टस की जगह इस बार पीपल, पाकड़ और औषधीय पौधे लगवाए गए हैं। पर्यावरण की रक्षा के लिए ही प्रदेश में इको टूरिज्म को पहचानने की कार्ययोजना पर काम हो रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि नदी अभियान अपने उद्देश्य में सफल होगा। जल को जीवन से जोड़ना है।

नदियों के लिए वैज्ञानिक आधार पर बने राष्ट्रीय नीतिः सद्गुरु

नदी अभियान पर निकले सद्गुरु ने कहा कि नदियों को बचाने के लिए वैज्ञानिक आधार पर राष्ट्रीय नीति बने। नदियों को बचाने में 20 से 25 साल लगेंगे। तब तक ना हम होंगे ना आप होंगे। केंद्र में कौन सी सरकार होगी, पता नहीं। नीति बन जाए तो जो भी सरकारें होंगी काम होगा। आह्वान किया कि हमें आने वाली पीढ़ी को 50 साल पहले जैसा प्लानेट (धरती) दें। उन्होंने कहा कि आजादी के समय टूटा-फूटा देश मिला था। शुरू के 50 साल संघर्ष में गुजरे। बाद के 20 साल में हमनें तेज विकास किया। संसाधनों का दोहन किया। यह गड़बड़ी इन्हीं 20 सालों की है। गलती किसने की पीछे मुड़कर यह देखने की जरूरत नहीं है। इस गड़बड़ी को ठीक करने के लिए वैज्ञानिक पहल होनी चाहिए। सद्गुरु ने कहा कि पहली बार दो योगी एक साथ बैठकर नदियों को बचाने के मुद्दे पर बात कर रहे हैं। अच्छी बात यह है कि आज सभी राजनीतिक दल इस रैली का समर्थन कर रहे हैं। एक आवाज आ रही है नदी बचाओ। बच्चों से मुखातिब होते हुए उन्होंने कहा कि बच्चे सेल्फी विद रीवर लें। नदियों के बारे में बच्चों को बताएं। ये बच्चे सेल्फी युग के हैं। यह भी कहा कि हमारा युग सेल्फिस वाला रहा है।

नदियां बर्बाद होंगी जो जनजीवन तबाह हो जाएगा : दिनेश शर्मा

उप मुख्यमंत्री डॉ. दिनेश शर्मा ने कहा कि नदियां प्रकृति को सुंदर बनाती हैं। नदियां बर्बाद होंगी तो जनजीवन तबाह हो जाएगा। लखनऊ में जलस्तर नीचे जा रहा है। कई इलाके में जलस्तर डेंजर जोन में हैं। हम लोग नदी को मां कहते हैं इसका संरक्षण करना होगा। नदियों के संरक्षण का यह कार्य चुनौतीपूर्ण है। क्रिकेटर सुरेश रैना ने भी नदियों को बचाने की अपील की लोगों से कहा कि इस अभियान से जुड़ें। कार्यक्रम में उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य, पूर्व मंत्री रघुराज प्रताप सिंह राजा भैया औरा मालिनी अवस्थी आदि भी उपस्थित थे। लखनऊ। नदी अभियान पर निकले सद्गुरु वासुदेव जग्गी ने लोगों को जागरूक करने के साथ ही सरकार को सुझाव देने का खाका खींच रखा है। दो अक्टूबर को अभियान समाप्त होने के बाद सद्गुरु केंद्र सरकार को अपना विजन डॉक्यूमेंट देंगे। सद्गुरु ने कहा कि यह विजन डॉक्यूमेंट सात सौ पेज का है। डॉक्यूमेंट में इस बात का विस्तार से जिक्र है कि नदियों को कैसे बचाया जाए। इससे पूर्व प्रेसवार्ता में सद्गुरु ने कहा कि नदियों में शव और फूल फेंका जाना खराब नहीं है यह अच्छा है। नदियों के जलजीवों को इससे भोजन मिल जाता है।

अब पत्नी बनी साध्वी,बच्ची और 100 करोड़ की प्रॉपर्टी का किया है त्याग

नई दिल्ली। तीन वर्षीय बच्ची और सौ करोड़ की प्रॉपर्टी को छोड़कर संत बनने वाले सुमित राठौड़ के बाद अब उनकी पत्नी ने भी दीक्षा ले ली है। दो दिन पहले किसी वजह से 34 वर्षीय अनामिका राठौड़ साध्वी की दीक्षा नहीं ले पाई थीं।

दीक्षा लेने के बाद अब अनामिका राठौड़ साध्वी अनाकार के नाम से जानी जाएंगी। अनामिका को भी आचार्य रामलाल जी महराज ने दीक्षा दिलाई। इससे पहले रामलाल जी महराज ने सुमित को संत की दीक्षा दिलाई थी। मध्य प्रदेश में नीमच जिले के अखिल भारतीय साधुमार्गी जैन श्रवक संघ के इंचार्ज संदीप खाबिया ने कहा कि यह पूरा कार्यक्रम सूरत में हुआ। अनामिका के दीक्षा लेने के समय उनके घर वाले कार्यक्रम स्थल पर मौजूद थे। हालांकि, इस कार्यक्रम को काफी सादगी से संपन्न किया गया।

कपल के फैसले से आश्चर्यचकित हुए लोग

सुमित और अनामिका राठौड़ के साध्वी बनने के फैसले से आसपास के लोग आश्चर्यचकित रह गए। कई लोगों ने तीन साल की बच्ची को छोड़ने के फैसले की आलोचना की थी। वहीं, जिस समय सुमित ने संत की दीक्षा ली थी, उस वक्त कुछ मानवाधिकार कार्यकर्ताओं ने हस्तक्षेप कर अनामिका के दीक्षा लेने पर रोक लगा दी थी।

अनामिका ने बच्ची के बारे में पुलिस से ये कहा

अनामिका ने अधिकारियों से बताया कि अगर वह साध्वी बनती हैं तो उनकी बेटी अनाथ नहीं होगी। उनके भाई और ननद उसे गोद ले रहे हैं। एनएचआरसी और लोगों द्वारा लगाए जा रहे सभी आरोप बेबुनियाद और सही नहीं है।

प्राइमरी स्कूलों में अब शिक्षकों की भर्ती लिखित परीक्षा से

योगी कैबिनेट बैठक: शिक्षा मित्रों को राहत, 2.5 वेटेज अंक देने का फैसला

लखनऊ। उत्तर प्रदेश सरकार ने राज्य में प्राइमरी स्कूलों में शिक्षा व्यवस्था सुधारने की दृष्टि से मंगलवार को कई अहम फैसले किए। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अध्यक्षता में हुई कैबिनेट की बैठक में शिक्षा मित्रों को राहत देने के लिए उनको 2.5 वेटेज अंक देने का फैसला किया गया है।

यह भी फैसला किया गया है कि प्राइमरी स्कूलों में अब लिखित परीक्षा के आधार पर शिक्षकों की भर्ती की जाएगी।

प्राइमरी शिक्षकों के एक लाख 37 हजार खाली पदों पर भी लिखित परीक्षा के आधार पर ही भर्ती होगी। शिक्षा के अधिकार (आरटीई) के तहत गरीबों को 25 फीसदी सीटों पर प्रवेश देने को लेकर प्राइवेट स्कूलों पर शिकंजा कसा जाएगा।

अध्यापक नियमावली में संशोधन को मंजूरी

सरकार के प्रवक्ता और कैबिनेट मंत्री श्रीकांत शर्मा ने बताया कि प्राइवेट स्कूलों में शिक्षकों के चयन के मापदंड में बदलाव किया गया है। इसके लिए यूपी बेसिक शिक्षा अध्यापक नियमावली में संशोधन को मंजूरी दी गई है।

जिसके तहत प्राइमरी शिक्षकों की भर्ती लिखित परीक्षा और शैक्षणिक प्रमाण पत्रों के आधार पर की जाएगी। लिखित परीक्षा के 60 अंक और शैक्षणिक प्रमाण पत्रों के 40 अंक होंगे। खास बात यह है कि लिखित परीक्षा में केवल टीईटी पास ही बैठ सकेंगे।

25 अंकों से ज्यादा वेटेज नहीं

बेसिक शिक्षा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) अनुपमा जायसवाल ने बताया कि सुप्रीम कोर्ट के फैसले का पालन करते हुए कैबिनेट ने शिक्षा मित्रों को प्रति वर्ष 2.5 वेटेज अंक (भार अंक) देने का फैसला किया है। पांच साल की सेवा वाले शिक्षा मित्रों को 15 नंबर दिए जाएंगे। पूरी सेवा पर कुल 25 अंकों से ज्यादा का वेटेज नहीं दिया जाएगा।

यूपी:15 अक्टूबर टीईटी परीक्षा देंगे शिक्षामित्र,दिसंबर में होगी भर्ती

निजी स्कूलों की मनमानी रोकेंगे

प्रवक्ता ने बताया कि यूपी निःशुल्क बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम में संशोधन को मंजूरी दी गई है। जिसके तहत प्राइवेट स्कूलों की मनमानी पर अंकुश लगाया जाएगा। 25 फीसदी गरीब छात्रों का प्रवेश कोटा प्राइवेट स्कूलों में सुनिश्चित कराया जाएगा। रेडियस क्या रहे, यह सरकार तय कर रही है। एक सवाल के जवाब में प्रवक्ता ने बताया कि योगी सरकार इसीलिए

प्राइमरी शिक्षा व्यवस्था में सुधार कर रही है जिससे सरकारी स्कूलों में नेताओं और अफसरों के भी बच्चे पढ़ सकें। हाईकोर्ट ने सरकारी स्कूलों में नेताओं और अफसरों के बच्चों के प्रवेश लेने के आदेश दिए थे। प्रवक्ता ने कहा कि भाजपा सरकार उसी दिशा में आगे बढ़ रही है। जिससे बच्चों को क्वालिटी शिक्षा मिल सके। इसीलिए चयन के मापदंड में बदलाव किया है।

शब्द और कुछ नहीं हमारे
विचारों की छवियां हैं -जॉन ड्राइडेन

''राइट टू रिप्लाई'

सयुक्त राष्ट्र में इस्लामाबाद की आतंकवादी नीति के मसले पर विदेश मंत्री सुषमा स्वराज द्वारा बेनकाब किए जाने के जवाब में पाकिस्तान का अति उत्साह में आकर झूठ बोलना उसे ही शर्मसार कर गया। सुषमा स्वराज के भाषण के बाद ''राइट टू रिप्लाई' के तहत पाकिस्तान की संयुक्त राष्ट्र में स्थायी प्रतिनिधि मलीहा लोदी ने कश्मीर में मानवाधिकार के उल्लंघन का मामला उठाया और प्रमाण के तौर पर एक ऐसी लड़की की तस्वीर दिखाई जो गाजा पट्टी की रहने वाली राव्या अबू जोमा की थी। इससे अंतरराष्ट्रीय समुदाय में पाकिस्तान की नाक नीची हुई और भारत पर उसका पलटवार भी खाली गया। पाकिस्तानी प्रतिनिधि मलीहा लोदी ने जिस छिछले स्तर पर उतर कर भारत के खिलाफ पलटवार किया उससे संयुक्त राष्ट्र जैसे नियंतण्र मंच की प्रतिष्ठा भी कम हुई। संयुक्त राष्ट्र के इतिहास में शायद यह पहला मौका होगा जब अंतरराष्ट्रीय समुदाय ने किसी देश के प्रतिनिधि को झूठ बोलते देखा। यह गंभीर मसला है, और संयुक्त राष्ट्र के प्रशासनिक अधिकारियों को इस मसले पर मलीहा लोदी से जवाब तलब करना चाहिए क्योंकि इस तरह की घटनाएं यदि दोहराई जाती रहेंगी तो इस नियंतण्र संस्था का हश्र भी तीसरे विश्व के लोकतांत्रिक सदनों की तरह होकर रह जाएगा। दरअसल, झूठ बोलना और तयों पर परदा डालना पाकिस्तान की विदेश नीति का प्रमुख हिस्सा है। एक असफल राज्य से इससे अलग अपेक्षा भी क्या की जा सकती है? आतंकवादी ओसामा बिन लादेन और मुल्ला उमर के अपने देश में रहने की बात वह तब तक छिपाता रहा जब तक अमेरिका ने उनको मार नहीं गिराया। भारतीय सेना की सर्जिकल स्ट्राइक को भी उसने सिरे से नकार दिया। हालांकि उसकी स्वीकारोक्ति का मतलब अपने देश में आतंकवाद के आधारभूत ढांचे का मौजूद होना है, जिसका वह लगातार खंडन करता आ रहा है। अनेक मिसालों से यह साफहो चुका है कि कठिन परिस्थितियों में वह ऐसा ही करता है। पाकिस्तान ''आतंक की जमीन' से ''पवित्र भूमि' की ओर जितना जल्द हो लौट आए, इसी में उसकी भलाईहै। युद्ध से न उसका भला होगा और न भारत का। यह भी सच है कि कोईनहीं चाहता कि आणविक हथियारों से लैस दोनों देशों के बीच कोईव्यापक युद्ध हो। शांति के रास्ते पर चल कर ही पाकिस्तान अपना सामाजिक और आर्थिक विकास कर सकता है। इस्लामाबाद को भी इस तय को समझना होगा।

कोहली की आक्रामकता

विराट सेना का विजयी सिलसिला जारी है। उन्होंने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ इंदौर में खेले गए तीसरे वनडे मैच में जीत पाकर 3-0 की बढ़त से सीरीज जीतना पक्का कर लिया है। इस जीत से भारत आईसीसी वनडे रैंकिंग में नम्बर एक पर पहुंच गया है। वह टेस्ट और वनडे दोनों में नम्बर वन है। इससे टीम इंडिया के दबदबे का अहसास होता है। टीम में इस निखार के पीछे युवा कप्तान विराट कोहली की आक्रामकता और रवि शास्त्री की चतुराई की अहम भूमिका है। इंदौर मैच की ही बात करें तो टीम के युवा ऑलराउंडर हार्दिक पांड्या को नम्बर चार पर भेजकर कप्तान ने जुआ खेला और हार्दिक ने कप्तान के भरोसे पर पूरी तरह खरा उतरकर जीत दिला दी। भारतीय टीम के जीतें पाकर दबदबा बनाने के बावजूद यह लगता है कि मध्यक्रम अभी चैंपियनों की तरह मजबूत नहीं बन सका है। यह सही है कि मनीष पांडे ने इस जीत में अहम पारी खेली। पर वह और केदार जाधव दोनों ही सही मायनों में अपनी जिम्मेदारी के साथ न्याय नहीं कर सके हैं।

बेहतर यही होगा कि इस सीरीज में एक ओपनर के तौर पर रंगत बिखेर रहे अजिंक्य रहाणो को शिखर धवन की वापसी पर एकादश से बाहर बैठाने के बजाय मध्यक्रम में खिलाया जा सकता है। हार्दिक पांड्या के चौथे नंबर पर सेट हो जाने पर मध्यक्रम में काफी मजबूती आ सकती है।

अभी तो हमने ज्यादातर मैच भारतीय उपमहाद्वीप में खेले हैं, इसलिए इनके बोझे को ढोया जा सका है। लेकिन नवम्बर में दक्षिण अफ्रीका जाने पर इस तरह की कमजोरी टीम के लिए मुश्किलें खड़ी कर सकती है। इसमें कोई दो राय नहीं हैं कि टीम इंडिया पिछले दिनों में काफी संतुलित हुई है। पर आगामी दक्षिण अफ्रीकी दौरे के बाद न्यूजीलैंड और इंग्लैंड के दौरों पर टीम की सही परीक्षा होगी। इन दौरों से पता चलेगा कि 2019 में इंग्लैंड में होने वाले विश्व कप के लिए कितने तैयार हैं। यह सही है कि हमारा पेस और स्पिन अटैक अच्छा है। लेकिन आप जब विपरीत परिस्थितियों में प्रतिद्वंद्वी बेहतर अटैक का सामना करेंगे, उससे विश्व कप तैयारियों का सही जायजा हो पाएगा। उस समय ही पता चलेगा कि विराट और रवि शास्त्री का तालमेल कितना कामयाब है।

बदलाव साथ होने वाली घटनाये

भारतीय समाज में दलित नेतृत्व आता है, तो उसमें वही नेतृत्व राजनीतिक सत्ता को सामाजिक स्तर पर महसूस करा पाता है, जिसका ढांचा होता है। लेकिन ठोस तय है कि दलित सत्ता में नेतृत्व के संदेश से सुरक्षा बोध महसूस करता है, और उसके भीतर किसी जाति के खिलाफ आक्रामकता का भाव पैदा नहीं होता। हद से हद वह एक समान होने का भाव महसूस करता है। लेकिन दूसरी तरफ सामाजिक रूप से वर्चस्व रखने वाली जातियां या संप्रदाय अपने अनुकूल नेतृत्व आने के साथ ही आक्रामकता के भाव से भर जाते हैं।

सतीश पेडणोकर

जब नया नेतृत्व आता है, तो अपने आप में एक संदेश होता है। किसी भी स्तर पर नेतृत्व में बदलाव के साथ होने वाली घटनाओं पर सरसरी नजर डालें तो हमलों और नेतृत्व के संदेश के बीच रिश्ते के सिद्धांत की खोज पूरी हो सकती है। संसदीय राजनीति में ऐसे ही संदेशों के जरिए सफलता पाने की सबसे ज्यादा कोशिश होती है। इसी कड़ी में दलितों के खिलाफ उत्तर प्रदेश के कई हिस्सों में जाति विशेष द्वारा हमले की घटनाएं लगातार हो रही हैं। अप्रैल से सितम्बर, 2017 तक दलित विरोधी जातिवादी हमलों का भी यहां इसी रूप में विश्लेषण किया जा सकता है। पहला प्रश्न कि सत्ता में नेतृत्व बदलने के साथ ही खास तरह की घटनाओं की एक कड़ी क्यों शुरू हो जाती है? राजनीतिक सत्ता को व्यवस्था की कुंजी कहा जाता है। लेकिन यह तभी कारगर होती है, जब सामाजिक स्तर पर राजनीतिक सत्ता को संचालित करने का ढांचा मौजूद हो। भारतीय समाज में दलित नेतृत्व आता है, तो उसमें वही नेतृत्व राजनीतिक सत्ता को सामाजिक स्तर पर महसूस करा पाता है, जिसका ढांचा होता है। लेकिन ठोस तय है कि दलित सत्ता में नेतृत्व के संदेश से सुरक्षा बोध महसूस करता है, और उसके भीतर किसी जाति के खिलाफ आक्रामकता का भाव पैदा नहीं होता। हद से हद वह एक समान होने का भाव महसूस करता है। लेकिन दूसरी तरफ सामाजिक रूप से वर्चस्व रखने वाली जातियां या संप्रदाय अपने अनुकूल नेतृत्व आने के साथ ही आक्रामकता के भाव से भर जाते हैं। वे अपने सामाजिक वर्चस्व की जगह को और फैलाने के मौके के रूप में सत्ता परिवर्तन का इस्तेमाल करना चाहते हैं। दूसरी तरफ दमित-वंचित जातियों में जो भाव और विास होता है, उसे खत्म करने की कोशिश करने के मौके के रूप में भी उस नेतृत्व परिवर्तन की घटना का इस्तेमाल करना चाहते हैं। पश्चिम उत्तर प्रदेश में अप्रैल से सितम्बर के बीच घटनाओं पर सरसरी नजर डालें। शब्बीरपुर में पहली बार हुआ कि गैर-सुरक्षित क्षेत्र से दलित गांव प्रधान निर्वाचित हो गए। दूसरी घटना सहारनपुर के धूधली गांव की हैं, जहां 14 अप्रैल को दलितों ने डॉ. भीमराव अंबेडकर का जन्म दिवस मना लिया था। लेकिन भाजपा के नेता एवं सासंद 20 अप्रैल को डॉ. अंबेडकर की शोभा यात्रा निकालना चाहते थे जबकि शोभा यात्रा जैसे कार्यक्रम दलितों की संस्कृति से नहीं मिलते। लेकिन भाजपा सदस्यों ने ''शोभायात्रा' निकाली क्योंकि वे डॉ. अंबेडकर का भाजपाकरण करना चाहते हैं, और वहां के मुसलमानों के विरोध में दलितों को खड़ा करने के लिए ''शोभायात्रा' का इस्तेमाल करना चाहते थे। लेकिन दलितों और खास तौर से भीम आर्मी के सक्रिय सदस्यों ने सांप्रदायिक दंगों के लिए अपना इस्तेमाल नहीं होने दिया। इस बात को लेकर भीम आर्मी के सदस्यों के खिलाफ बेहद चिढ़ मच गई।भारतीय समाज में कई ऐसी घटनाएं सामने आई हैं कि वर्चस्व रखने वाली जातियों और संप्रदाय ने अपने हितों में जाति के विरुद्ध जातियों और धार्मिक समूहों का इस्तेमाल करने की कोशिश की। जब उन्होंने इस्तेमाल होने से मना कर दिया तो उनके खिलाफ हमले शुरू हो गए। कांग्रेस की सरकार के दौरान आरक्षण का विरोध करने वालों के समर्थन में जब गुजरात के मुसलमानों ने अपनी दूकानें बंद करने से मना कर दिया तो उनके खिलाफ सांप्रदायिक हमले शुरू हो गए। वंचित जातियों का विरोध और सांप्रदायिक हमले एक दूसरे से हमेशा जुड़े दिखते रहे हैं यानी वंचितों द्वारा वर्चस्व रखने वालों की साजिशों में शामिल नहीं होना भी एक अपराध है, और उसकी सजा सामाजिक ढांचे पर वर्चस्व रखने वाली शक्तियां तय करती हैं, और राजनीतिक सत्ता उसे संरक्षित करती है। उत्तर प्रदेश के इस इलाके में घटनाओं की वजह यह रही कि नेतृत्व में परिवर्तन से पहले दलित अपनी इच्छानुसार डॉ. अंबेडकर के पुतले की लंबाई और पुतले को लगाने की जगह की जो ऊंचाई तय कर रहे थे, वह वहां जाति वर्चस्व रखने वालों को मंजूर नहीं था। सामाजिक ढांचा दलितों पर वर्चस्व रखने का है और संविधान का ढांचा उन्हें समानता का एहसास करने का संदेश देता है। यह टकराव हमेशा वंचितों के दमन के रूप में ही घटित होता है। वंचितों को संविधान के ढांचे का संदेश तो मिलता है लेकिन आम तौर पर हमले की बाद संविधान की मशीनरियां उनके ही खिलाफ या हमलावरों को बचाने के पक्ष में झुकी दिखती है। पश्चिमी उत्तर प्रदेश की घटनाओं में एक नई प्रवृत्ति देखी गई। चूंकि वहां दलितों को भविष्य की ''शोभायात्राओं' में शामिल करने की योजना है, इसीलिए हमलावरों के विरु द्ध कार्रवाई के साथ दलितों के सक्रिय नेतृत्व पर भी कार्रवाई की गई। हमलावरों में से कुछ के खिलाफ कार्रवाई इसीलिए की गई ताकि दलितों के बीच ''शोभायात्राओं' के लिए समर्थन जुटाने की गुंजाइश बनी रहे तो दूसरी तरफ दलितों के नेतृत्व के खिलाफ कार्रवाई महज इसलिए की गई ताकि दलितों के बीच सक्रिय नहीं हो सके। संतुलन दिखाने की यह प्रवृत्ति है यानी उत्पीड़ितों को महज इसलिए जेल की सलाखों के पीछे डालना चाहिए क्योंकि उत्पीड़कों के खिलाफभी कार्रवाई करने की बाध्यता है?पश्चिमी उत्तर प्रदेश के इलाकों में शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण काम करने वाले संगठन भीम आर्मी के सदस्यों व गैर सदस्यों को पैतालीस की संख्या में शब्बीरपुर में हमले के बाद पकड़ा गया। यह महज पुलिस की कार्रवाई में एक संतुलन दिखाने के लिए वंचित समाज के इतने लोगों को गिरफ्तार किया गया। इसी तरह से अब राष्ट्रीय सुरक्षा कानून के जरिए या किसी भी तरह से भीम आर्मी के संस्थापक चन्द्रशेखर आजाद रावण को जेल में रखना चाहते हैं। इससे पहले दो हमलावरों के खिलाफरासुका लगाने की सूचना अखबारों में आई। दरअसल, चन्द्रशेखर को जेल में किसी तरह से बंद रखने का कोई तर्क और तय नहीं है, तो इसके लिए जरूरी लगा कि दो हमलावरों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई का संदेश दिया जाना जरूरी है। चन्द्रशेखर और उसके साथी महीनों तक जेल में बंद रहें उसके लिए तर्क तैयार करने की यह कोशिश है। सत्ता द्वारा तर्क तैयार करने के लिए तयों को दबाने की यह प्रवृत्ति वास्तव में वंचितों के लिए संवैधानिक अधिकारों को छीनने का एक अघोषित कानून है।

सत्संग

संकट की घड़ी

कहा गया है कि तनावपूर्ण समय में-सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक उथल-पुथल के समय में-विराट शुभ संभव होता है। क्या यह सूत्र इसी घटना की तरफ इंगित करता है जिसका हमें यहां पूना में आपके सान्निध्य में अनुभव मिल रहा है? हां; संकट की घड़ी बहुत कीमती घड़ी है। जब चीजें व्यवस्थित होती हैं, कहीं कोई संकट नहीं होता तो चीजें मर जाती हैं। जब कुछ बदल नहीं रहा होता तो तो करीब-करीब असंभव ही होता है स्वयं को बदलना। जब हर चीज अस्त-व्यस्त होती है, स्थायी नहीं होती, सुरक्षित नहीं होती, कोई नहीं जानता कि अगले पल क्या होगा-ऐसे अराजक समय में तुम स्वतंत्र होते हो, रूपांतरित हो सकते हो, उपलब्ध हो सकते हो अपनी अंतस सत्ता के आत्यंतिक केंद्र को। यह जेल जैसा ही है: हर चीज सुव्यवस्थित होती है तो किसी कैदी के लिए बाहर आना, जेल से भाग निकलना करीब-करीब असंभव ही होता है। लेकिन सोचो: भूचाल आया हो, हर चीज अव्यवस्थित हो गई हो, पता न हो कि पहरेदार कहां हैं, जेलर कहां है, सारे नियम टूट गए हों, हर कोई जान बचा कर भाग रहा हो-तो कैदी जरा भी सजग हो तो भाग सकता है; बिल्कुल मूर्ख है, तो ही अवसर चूकेगा। समाज उथल-पुथल में होता है, अराजकता-सी फैल जाती है। इस समय तुम चाहो, तो निकल सकते हो कैद से। बहुत आसान है, क्योंकि कोई तुम्हारे पीछे नहीं है। परिस्थिति ऐसी है कि हर कोई अपनी फिक्र कर रहा होता है-तुम्हारी तरफ कोई नहीं देख रहा होता। चूकना मत इस घड़ी को। संकट की घड़ियों में लगभग सदा ही बहुत लोगों को बुद्धत्व घटा है। समाज व्यवस्थित हो तो करीब-करीब असंभव ही होता है विद्रोह करना, अतिक्रमण करना, नियमों का अनुसरण न करना, तो बुद्धत्व ज्यादा कठिन हो जाता है-वस्तुत: वह है समाज से हटना और एक व्यक्ति बनना। समाज पसंद नहीं करता व्यक्तियों को: वह पसंद करता है यंत्र-मानवों को, जो लगते तो हैं बिल्कुल व्यक्तियों की भांति लेकिन व्यक्ति होते नहीं। उसे पसंद हैं मुखौटे, चालबाज, पाखंडी। प्रामाणिक व्यक्ति तो एक झंझट होता है। एक प्रामाणिक व्यक्ति सदा मुक्त होता है। तुम जबरन उस पर चीजें आरोपित नहीं कर सकते; कैदी या गुलाम नहीं बना सकते। वह अपना जीवन गंवाना पसंद करेगा, लेकिन वह अपनी स्वतंत्रता खोना पसंद नहीं करेगा। स्वतंत्रता उसके लिए जीवन से भी ज्यादा कीमती है।

चलते चलते

आरोपों से धरे

बाबा विषय पर आयोजित निबंध-प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार विजेता निबंध इस प्रकार है-बाबा टीवी चैनलों की तरह कई प्रकार के होते हैं। जैसे एक टीवी चैनल पर दिन भर सीआईडी आता रहता है, वैसे ही एक बाबा सिर्फ फलाहार शो करते हैं। सीआईडी कामयाब शो है, और फलाहार भी कामयाब शो माना जा सकता है, जब तक बाबा रेप के आरोप में ना धर लिए जाएं। बाबा इस कदर इन दिनों रेप के आरोपों में धरे जा रहे हैं कि जिन बाबाओं पर रेप के आरोप ना लगे हों, उनकी बाबाई प्रामाणिकता पर कतिपय संदेह उपजना स्वाभाविक होता जा रहा है। बड़े बाबा रेप के आरोप में अंदर जा रहे हैं। मंझोले छिछोरगर्दी के आरोप में पब्लिक द्वारा कूटे जा रहे हैं-बात सिर्फ बिग बॉस फेम-ओम बाबा की ही नहीं हो रही है। छिछोरगर्दी करके पिटने का जोखिम जो

> जैसे एक टीवी चैनल पर दिन भर सीआईडी आता रहता है, वैसे ही एक बाबा सिर्फ फलाहार शो करते हैं। सीआईडी कामयाब शो है, और फलाहार भी कामयाब शो माना जा सकता है, जब तक बाबा रेप के आरोप में ना धर लिएजाएं। बाबा इस कदर इन दिनों रेप के आरोपों में धरे जा रहे हैं ना लगे हों,

उठा ले, उसके लिए बिग बॉस के दरवाजे खुल सकते हैं। बाबागिरी में अपार संभावनाएं दिखाई पड़ने लगी हैं। बाबाओं की जैसी भीषण वैरायटी इंडिया में दिखाई पड़ रही है, वैसी दुनिया में कहीं नहीं। अमेरिका जैसे विकतिस देश में भी बाबा टाइप लोग सामान्य-सी खुश जिंदगी जीने का आशीर्वाद देते हैं। पर भारत में विशेषज्ञ बाबा हैं। एक बाबा वीसा-पासपोर्ट का आशीर्वाद देते हैं। वह वीसेश्वर बाबा के नाम से प्रसिद्ध हो रहे हैं। ग्राहक, मौत और बाबा का कोई भरोसा नहीं है अब, क्या पता कब किधर का रु ख कर दें। दिल्ली में जब लॉटरी चला करती थीं, तो एक विख्यात लॉटरी बाबा थे, जो लॉटरी के नम्बर बताया करते थे। दिल्ली में लॉटरी बंद हुई तो इनकी लॉटरी खुल गई-यह लव गुरु बन गए, तब नये नये रेडियो चैनल खुल रहे थे। एक में यह लव गुरु बन गए। एक साक्षात्कार में इन्होंने बताया-लॉटरी और लव में एक-सा मामला होता है, ज्यादातर लोग दोनों मामलों में ही अनलकी होते हैं। अनलकी लोग शिकायत नहीं करते। एक और बाबा मिले अभी-केकेश्वर बाबा। केक लेकर भला करते हैं, सबसे ज्यादा भला वैसे इनके अपने बेटे का हो रहा है, जिसकी केक की दुकान है। यह बाबा बताते हैं कि ऊपर देवताओं को पूड़ी-मिठाई के प्रसाद से बोरियत हो गई है, तो वह पूड़ी-मिठाई का प्रसाद रिजेक्ट कर रहे हैं, केक पसंद किए जा रहे हैं ऊपर। कुल मिलाकर बाबाओं की वैरायटी के मामले में भारत के मुकाबिल कोई देश नहीं।

मुद्दा

''ई-वेस्ट' ''रीसाइकिल'

में हर साल 30 फीसदी की दर से ''ई-वेस्ट' यानी इलैक्ट्रानिक कूड़ा निकल रहा है। इसमें हम सिर्फ15 फीसद को ही ''रीसाइकिल' यानी दुबारा उपयोग में लाने लायक बना पा रहे हैं। यह जानकारी ''एसोचैम' की एक रिपोर्ट से मिली है। रिपोर्ट के मुताबिक, भारत कचरा पैदा करने वाले देशों की सूची में पांचवें स्थान पर है। एशिया में चीन 60 लाख मीट्रिक टन, जापान 22 लाख मीट्रिक टन और भारत 18 लाख मीट्रिक टन ई-वेस्ट पैदा करता है। इस कचरे को पैदा करने वाला सबसे बड़ा कारक मोबाइल है। आये दिन नये-नये मॉडल बाजार में आ रहे हैं, जिनकी उपयोगिता कुछ समय की ही होती है, और फिर वे कचरे के ढेर में समा जाते हैं। 2014 में विश्व में छोटे मोबाइलों से एक करोड़ 28 लाखटन कचरा निकला था। एक करोड़ 18 लाख मीट्रिक टन बड़े उपकरणों, 70 लाख मीट्रिक टन ताप बदलने वाले उपकरणों, 60 लाख 30 हजार मीट्रिक टन परदों यानी स्क्रीन्स, 30 लाख मीट्रिक टन छोटे आईटी उपकरणों और 10 लाख मीट्रिक टन लैंपों से जमा होता था। 2014 में ई-वेस्ट को इकट्ठा करने के लिए विश्व भर में 10 लाख ट्रकों का इस्तेमाल हुआ था, जिन्हें एक लाइन में खड़ा किया जाता तो 23000 किमी. लंबी लाइन बनती। 2014 में नोव्रे, स्वीडन और फिनलैंड ने दुबारा काम में लाने के लिए 50 प्रतिशत कचरे का शोधन किया। अक्सर कचरे को जमा करने में असंगठित क्षेत्र के मजदूर होते हैं। ये नंगे हाथों से ही कचरे को पकड़ते हैं। किसी तरह के मास्क का प्रयोग चेहरा ढकने के लिए नहीं करते। इनमें मजदूरों में भी पांच लाख बच्चे हैं, जिनकी आयु 10 से 14 वर्ष के बीच होती है, जो टनों जहरीली भारी धातुएं, रसायनों, पारा, क्रोमियम, शीशे के गिलास और फास्फोरस उठाते हैं, जिससे कैंसर से ग्रसित हो जाते हैं। फेफड़े, लीवर और किडनी खराब हो जाते हैं, मस्तिष्क की वृद्धि भी रुक जाती है। पता चला है कि 80 प्रतिशत मजदूर, जो ई-वेस्ट को इकट्ठा करने के काम में लगे हैं, सांस की तमाम बीमारियों के शिकार हैं। सांस लेने में कठिनाई, चिड़चिड़ापन, खांसी और घुटन उनकी जिंदगी का हिस्सा बन गए हैं। ई-वेस्ट कितना जहरीला है? इसका अंदाजा आम आदमी को नहीं है। लेकिन इन बातों पर गौर करें तो आने वाले समय में यही वेस्ट तरह-तरह की बीमारियों को न्योता देने वाला है। आज हम आराम से कानों में मोबाइल लगाकर चल रहे हैं, यही ध्वनि प्रदूषण के रूप में कानों को क्षति पहुंचाने का काम कर रहा है। मोबाइल हमारी आवश्यक वस्तुओं में शुमार हो गया है। इस कल्पना से हम बहुत कुछ खो रहे हैं। अभी तो हमें इसका अहसास नहीं हो रहा है, पर यही हर व्यक्ति की जिंदगी में शून्यता लाएगी। बात ई-कचरे को समाप्त करने से शुरू हुई थी, पर कचरा होने से पूर्व इसके प्रयोग को भी नियंत्रित करने की जरूरत है। वैज्ञानिकों ने आकलन भी लगाया है कि आने वाले समय में मानव का आकार भी बदल सकता है। वह अपने अंगों को काम में नहीं लाएगा तो वे धीरे-धीरे समाप्त होता जाएगा। पैरों का उपयोग नहीं करेगा, उन्हें गतिमान नहीं रखेगा तो स्वत: ही समाप्ति की ओर चला जाएगा। कचरे के बाह्य प्रभाव इतने सारे हैं कि हर रोग का जन्म इसी से होता है। किसी समय कैंसर इतना व्यापक नहीं था, जितना आज है, यह भी इन्हीं वस्तुओं की देन है। आज तरह-तरह की बीमारियां जन्म ले रही हैं, जिनके बारे में हमने सुना भी नहीं था। यह सब प्रदूषण का प्रतिफल है। वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण यानी हर तरह के प्रदूषण से जीवन खतरे में है। सभी प्रकार के कचरे की रीसाइकिलिंग की जरूरत है। उत्पाद की डयूरेबिलिटी यानी आयु बढ़ाने के प्रयास करने चाहिएताकि सामान का कचरा न बनने का समय बढ़ सके। सरकार के लिए जरूरी है कि यह कार्य उनकी नैतिक जिम्मेदारी में शामिल करे। जो विदेशी कंपनियां हैं, उन्हें अपने-अपने देशों में रीसाइकिलिंग प्लांट लगाने चाहिए। इसलिए ई-वेस्ट करने से पूर्व उन उपकरणों के इस्तेमाल पर नियंतण्र करने के अलावा कचरे के सही ढंग से ट्रीटमेंट के भी प्रयास होने चाहिए।

पहले अपने घर की फिक करें जनाब!

आभा स्वामी

केंद्र में सत्ताधारी भाजपा चुनावी मोड में आ चुकी है। उसके राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह वर्ष 2019 में होने वाले आम चुनाव की तैयारियों के क्रम में 'मिशन 360 की घोषणा कर रहे हैं। दूसरी ओर कांग्रेस बेसुध अवस्था में नजर आती है, मानो उसेइस बात का भान ही नहीं कि आम चुनाव में दो साल से भी कम वक्त बचा है। वह अब भी अंदरूनी संगठनात्मक द्वंद्व और नेतृत्व संबंधी मसले में उलझी है। सोनिया गांधी की जगह राहुल गांधी को पार्टी की कमान सौंपने का निर्णय काफी समय से लंबित है। लेकिन अब लगता है कि अगले महीने यह काम हो सकता है और वह भी इसलिए क्योंकि चुनाव आयोग का जबर्दस्त दबाव है। दरअसल चुनाव आयोग ने यह साफकर दिया है कि कांग्रेस को संगठनात्मक चुनावों के लिए और वक्त नहीं दिया जा सकता। उसे इस साल दिसंबर तक यह प्रक्रिया निपटानी होगी। गौरतलब है कि कांग्रेस में 2015 में संगठनात्मक चुनाव होने थे, जब बतौर अध्यक्ष सोनिया गांधी का कार्यकाल भी खत्म हो रहा था। लेकिन कांग्रेस बार-बार इसे टालती रही, क्योंकि राहुल गांधी पार्टी की कमान संभालने के लिए 'तैयार नजर नहीं आ रहे थे। सच तो यह है कि कांग्रेस खुद भी इसके लिए तैयार नहीं थी। इसके दो कारण हैं। पहला, कांग्रेस के वरिष्ठ नेता राहुल की नेतृत्व क्षमताओं को लेकर सशंकित हैं। दूसरा, यह भी साफनहीं है कि राहुल गांधी प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार के तौर पर यूपीए के सहयोगी दलों में स्वीकार्य होंगे या नहीं! सोनिया गांधी वर्ष 2003 में (शिमला सम्मेलन के बाद) पार्टी को पुनर्जीवित करने में सफल रही थीं और क्षेत्रीय दलों से चुनाव-पूर्व गठबंधन करते हुए वर्ष 2004 में इसे सत्ता में भी ले आईं। लेकिन कांग्रेस इस बात को लेकर आश्वस्त नहीं कि राहुल आगामी आम चुनाव के लिए ऐसा कोई जिताऊ गठबंधन तैयार कर सकेंगे। राहुल इन दिनों अमेरिका में हैं और वहां के विश्वविद्यालयों में छात्रों से उनके अंतर्संवाद को देखकर लगता है कि उनकी नेतृत्व संबंधी क्षमताओं को लेकर जो आशंकाएं जताई जा रही हैं, वे अकारण नहीं। राहुल ने अपने और पार्टी के मध्य एक तरह की दूरी बनाकर रखी है। उन्होंने 2014 के आम चुनाव में कांग्रेस की हार का दोष पार्टी नेताओं के 'घमंड और यूपीए सरकार में विजन के अभाव पर मढ़ दिया। यानी, परोक्षत: उन्होंने न सिर्फ पार्टी के वरिष्ठ नेताओं,बल्कि तत्कालीन प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह की भी आलोचना की। ये वही राहुल गांधी हैं, जिन्होंने 2013 में दागी सांसदों से संबंधित अध्यादेश को मीडिया के समक्ष 'बकवास बताते हुए फाड़ने की बात कही थी। इन्हीं राहुल गांधी ने वर्ष 2013 में जयपुर बैठक में एक भावुक भाषण दिया था और कार्यकर्ताओं से वादा किया था कि पार्टी के भीतर मेरिट के आधार पर तरक्की का सिस्टम लागू किया जाएगा। लेकिन अब वे यह कहते हुए वंशवादी राजनीति का बचाव कर रहे हैं कि 'भारत में तो ऐसा ही चलता है। उन्होंने अपनी मंडली में भी वंशवादी ही जमा कर रखे हैं। भंवर जितेंद्र सिंह, जितिन प्रसाद, सचिन पायलट, ज्योतिरादित्य सिंधिया, संदीप दीक्षित और मिलिंद देवड़ा जैसे नेताओं का राजनीतिक कॅरियर अपने परिवारों के सहारे ही खड़ा हुआ। इस क्लब के ताजातरीन सदस्य हैं समाजवादी पार्टी के मुखिया अखिलेश यादव, जिनके साथ राहुल गांधी ने यूपी चुनाव से ऐन पहले गठबंधन किया, लेकिन तब तक शायद बहुत देर हो चुकी थी और पार्टी को इससे कोई फायदा नहीं हुआ। अमेरिका में राहुल गांधी के संबोधनों में एकमात्र उल्लेखनीय बातयह नजर आई कि उन्होंने भारतीय अर्थव्यवस्था में गिरावट की ओर भी इशारा किया।

सार समाचार

प्रशांत शिविर से शरणार्थियों का पहला समूह अमेरिका के लिये रवाना

सिडनी। ऑस्ट्रेलिया के सुदूरवर्ती प्रशांत क्षेत्र के हिरासत शिविरों में रह रहे शरणार्थियों का पहला समूह अमेरिका के लिये रवाना हो गया। इन शरणार्थियों को अमेरिका के साथ हुए एक समझौते के तहत वहीं बसाया जायेगा। पोर्ट मोर्सबाई में अमेरिकी दूतावास ने बताया कि 24 शरणार्थियों को पापुआ न्यू गिनी के मैनुस द्वीप के तट पर रखा गया था जिन्होंने अमेरिका के अज्ञात स्थान के लिये जाने के क्रम में मनीला के लिये विमान से उड़ान भरी। दूतावास के सार्वजनिक मामलों के अधिकारी बेवर्ली थैकर ने कहा, ''ये ऐसे पहले समूह हैं जिन्हें गहन जांच प्रक्रिया के बाद मंजूरी मिली है और उन्होंने अमेरिका में पुनर्वास के लिये सभी जरूरी आवश्यकताओं को पूरा किया है।'' उन्होंने बताया कि करीब 30 अन्य शरणार्थियों को प्रशांत क्षेत्र के नौरा में रखा गया है और आगामी दिनों में वे भी अमेरिका के लिये रवाना होंगे।

जापान ने प्रशांत अभियान में 177 व्हेलों को मारा: सरकार

तोक्यो। जापान ने कहा कि उसने अपने पूर्वोत्तर तट पर एक वार्षिक अभियान के तहत 177 व्हेलों को मार डाला है। इसके बाद पशु अधिकार कार्यकर्ताओं और अन्य लोगों में सरकार के प्रति नाराजगी बढ़ गई है। देश की मत्स्य पालन एजेन्सी के मुताबिक, जून में बंदरगाह से रवाना हुए तीन पोत शिकार की गई 43 मिंके व्हेलों और 134 सेई व्हेलों को ले कर लौटे। जापान शिकार पर रोक संबंधी '' इंटरनेशनल व्हेलिंग कमीशन '' (आईडब्ल्यूसी) पर हस्ताक्षरकर्ता देश है। लेकिन वह एक खामी का फायदा उठाता है जिसके अनुसार, वैज्ञानिक शोध के नाम पर व्हेलों को मारने की अनुमति है। एजेंसी के अधिकारी कोहेई इतो ने 'एएफपी' को बताया ''सटीक संख्या का अनुमान लगाने के लिए अध्ययन आवश्यक है। हम व्हेल के वाणिज्यिक शिकार को फिर से शुरू करने की कोशिश करेंगे।''

फिलिपीन: राष्ट्रपति के घर के निकट हुई गोलीबारी

मनीला। फिलिपीन के राष्ट्रपति रोड्रिगो दुर्तेते के आवास के निकट गोलीबारी की घटना हुई है, जिसकी जांच की जा रही है। राष्ट्रपति के प्रवक्ता ने इसकी जानकारी दी। प्रवक्ता अरनेस्तो अबेला ने बताया कि यह घटना राष्ट्रपति मैदान के उत्कृष्ट सुरक्षा बल के कैंप में हई। यहां राष्ट्रपति का आवास भी है। अबेला ने यह बताने से मना कर दिया कि घटना के समय राष्ट्रपति इस क्षेत्र में मौजूद थे या नहीं। उन्होंने घटना की विस्तृत जानकारी देने से मना कर दिया। उन्होंने संवाददाताओं से बताया, 'इसकी जांच की जा रही है और स्थिति को स्पष्ट करने की जरूरत है।' उनसे पूछा गया कि जब गोलीबारी हुई थी तब राष्ट्रपति कहां थे?
इसका जवाब न देते हुउ अबेला ने कहा ''इस बारे में हमारे पास कोई जानकारी नहीं है।'' राष्ट्रपति सुरक्षा समूह ने अलग से बताया कि वह इस संबंध में बाद में प्रेस विज्ञप्ति जारी करेंगे। वहीं इससे पहले दुर्तेते ने बताया था कि उन्हें राष्ट्रपति परिसर में रहना अच्छा नहीं लगता है और वह प्राय- सप्ताहांत में अपने गृहनगर लौट आते हैं। वह दक्षिणी शहर दावोस के रहनेवाले हैं।

यरूशलम के चर्च में कोंकणी भजन पट्टिका का अनावरण

यरूशलम। भारत के ईसाई तीर्थयात्रियों की मौजूदगी में यरूशलम के ईन केरेम क्षेत्र में स्थित प्रख्यात विजिटेशन चर्च में ईसा मसीह की मां मरियम की स्तुति में कोंकणी भाषा में लिखी भजन पट्टिका का अनावरण किया। भारतीय ईसाई तीर्थयात्री कल उस समय भावविभोर हो उठे जब गोवा, दमन दीव के आर्क बिशप फादर फिलिप नेरी फेराओ ने कल मरियम की स्तुति में कोंकणी भाषा में लिखी भजन पट्टिका का अनावरण किया। फिलिप ने इस समारोह में कहा, ''कोंकणी बोलने वालों के लिए यह बड़े सम्मान और खुशी की बात है।'' हिन्दी, तमिल, मलयालम और कन्नड़ भाषाओं में स्तुति पट्टिकाएं विजिटेशन चर्च की दीवारों पर पहले ही स्थान पा चुकी हैं। गोवा से आए पर्यटकों ने कोंकणी भाषा में प्रार्थना और स्तुति की। समारोह के अंत में इन सभी तीर्थयात्रियों ने भारत का राष्ट्रगान गाया।

चेक रिपब्लिक की राजधानी प्राग के ओल्ड टाउन स्क्वेयर में बंधी रस्सी पर करतब करता एथलीट। यहां यह परफॉर्मेंस डायबीटिज पीड़ितों के अवेयरनेस कैंपन का हिस्सा था। प्राग में ऐसे कई कैंपेन चलते हैं जिनमें लोगों को अवेयर करने के साथ उनका एंटरटेनमेंट भी होता है।

यूएनएससी को अफगानिस्तान में आतंकवाद के वित्तपोषण पर प्रतिबंध लगाना चाहिए: भारत

संयुक्त राष्ट्र। (एजेंसी)।

भारत ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद से आग्रह किया है कि वह अफगानिस्तान में आतंकवाद को होने वाले वित्तपोषण के खिलाफ प्रतिबंध व्यवस्था का इस्तेमाल एक हथियार के रूप में करे। साथ ही उसने सीमा पार स्थित आतंकवादियों के सुरक्षित पनाहगाहों से खतरे के मद्देनजर इस हिंसाग्रस्त देश की संप्रभुता तथा स्थिरता को मजबूत करने के वास्ते समर्थन देने के लिए कहा।

भारत ने अंतरराष्ट्रीय समुदाय से यह भी सुनिश्चित करने का अनुरोध किया कि किसी भी स्तर पर और किसी भी जगह पर आतंकवाद और चरमपंथी ताकतों को सुरक्षित जगहें या पनाहगाह उपलब्ध न होने दी जायें। संयुक्त राष्ट्र में भारत के स्थायी प्रतिनिधि सैयद अकबरुद्दीन ने कहा, ''हमें अच्छे और बुरे आतंकवादियों में फर्क नहीं करना चाहिए या किसी एक समूह को दूसरे के खिलाफ नहीं खड़ा करना चाहिए।

तालिबान, हक्कानी नेटवर्क, अलकायदा, इस्लामिक स्टेट, लश्कर-ए-तैयबा, जैश-ए-मोहम्मद और उनके जैसे अन्य सभी आतंकवादी संगठनों को संयुक्त राष्ट्र ने गैरकानूनी घोषित किया है।'' पाकिस्तान पर निशाना साधते हुए उन्होंने कहा, ''अंतरराष्ट्रीय समुदाय चुप नहीं रह सकता। यह अंतरराष्ट्रीय समुदाय का पहला और सबसे महत्वपूर्ण कर्तव्य है कि वह यह सुनिश्चित करें कि आतंकवाद और चरमपंथ की ताकतों को कहीं भी और किसी भी स्तर पर सुरक्षित जगहें और पनाहगाह ना मिलें।'' अफगानिस्तान पर संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की चर्चा में भाग लेते हुए अकबरुद्दीन ने कहा कि इन आतंकवादी संगठनों से आतंकवादी संगठनों की तरह ही पेश आना चाहिए और उनकी गतिविधियों के लिए कोई स्पष्टीकरण नहीं देना चाहिए। अफगानिस्तान की अस्थिर हालत का जिक्र करते हुए शीर्ष भारतीय दूत ने कहा कि अस्पतालों, स्कूलों, अंतरराष्ट्रीय विकास एजेंसियों और राजनयिक मिशनों पर लगातार होते हमले गंभीर चिंता का विषय हैं।

उन्होंने कहा '' सुरक्षा परिषद को अफगानिस्तान में आतंकवादियों द्वारा अवैध गतिविधियों से जुटाई जा रही धनराशि के संबंध में कार्रवाई करनी चाहिए। इस संबंध में हम परिषद से इस बात पर विचार करने के लिए कहना चाहेंगे कि 1988 की प्रतिबंध व्यवस्था का कैसे इस्तेमाल किया जा सकता है और क्या यह शांति प्रक्रिया में प्रगति के लिए प्रभावी है। ये उल्लेखनीय कदम है और इनका इस्तेमाल पूरी क्षमता के साथ किया जा सकता है।'' उन्होंने कहा '' यहां संयुक्त राष्ट्र या अन्य बहुपक्षीय मंचों पर हमारे सामूहिक प्रयास हो रहे हैं और हमें अफगानिस्तान की संप्रभुता और स्थिरता को मजबूत करने पर समर्थन करने के लिए ध्यान देना होगा। अफगानिस्तान की सीमाओं के पार अपने सुरक्षित पनाहगाहों से आतंकवादी इन दो चीजों को कमजोर करने का प्रयास कर रहे हैं।''

अकबरुद्दीन ने कहा, ''अफगानिस्तान में कई समस्याएं होने के कारण अफगान क्षेत्र उन अपराधियों और आतंकवादी संगठनों के लिए आकर्षक बन गया है जो अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद और अपराध नेटवर्क से जुड़े हुए हैं। ये संगठन अफगानिस्तान की संपदा चोरी कर रहे हैं जो इसी देश के लोगों की है।'' अफगानिस्तान के विदेश मंत्री सलाहुद्दीन रब्बानी ने सीमा पार आतंकवादियों को सुरक्षित जगहें देने और पनाहगाहों की पहचान किये जाने की बात पर अकबरुद्दीन का समर्थन किया। रब्बानी ने कहा, ''अफगानिस्तान पर असर डाल रहे आतंकवाद और हिंसक चरमपंथ की पीड़ा पड़ोसी देश की लंबे समय से नीति रही है ताकि अफगानिस्तान अस्थिर रहे। इसने कई दशकों तक अफगानिस्तान को कष्ट दिया है और इसकी जड़ें मेरे देश के बाहर स्थित आतंकवादियों के सुरक्षित स्थानों और पनाहगाहों में स्थित है।'' उन्होंने कहा कि दक्षिण एशिया के लिए अमेरिका की नई नीति ने देश के लोगों में नई उम्मीद जगाई है। उन्होंने कहा '' इस संबंध में हम उस तथ्य का स्वागत करते है कि नयी रणनीति ने हमारे क्षेत्र में आतंकवादियों के सुरक्षित पनाहगाह और स्थानों की समस्या को उठाने को मान्यता दी है और आतंकवादी समूहों द्वारा लिये जा रहे राजनीतिक, ताकिक और वित्तीय समर्थन को समाप्त करने के प्रयासों के लिए अधिक प्रतिबद्ध है।

मुसलमानों का 'जातीय सफाया' या नरसंहार नहीं हुआ: म्यामां

संयुक्त राष्ट्र (एजेंसी)।

संयुक्त राष्ट्र में म्यामां के दूत ने सोमवार को कहा कि मुसलमानों का 'जातीय सफाया' या नरसंहार नहीं हुआ है। उन्होंने कुछ देशों द्वारा रखाइन राज्य में हालात बयां करने के लिए इन शब्दों का इस्तेमाल करने पर कड़ी आपत्ति जताई। संयुक्त राष्ट्र में म्यामां के दूत हाऊ डो सुआन ने संयुक्त राष्ट्र महासभा के छह दिवसीय सत्र के अंतिम दिन 'जवाब देने के अधिकार' का इस्तेमाल किया। उन्होंने 193 सदस्य वाले विश्व निकाय में विभिन्न देशों के नेताओं के भाषणों में लगाए आरोपों को निराधार और 'गैर जिम्मेदाराना टिप्पणियां' बताया।

उन्होंने किसी देश का नाम नहीं लिया। लेकिन म्यामां छोड़कर भागने वाले 4,20,000 से अधिक रोहिंग्या मुसलमानों की दयनीय स्थिति की बात इस मंच से कई नेताओं ने उठाई थी। बीती 25 अगस्त को रोहिंग्या विद्रोहियों ने सुरक्षा चौकी पर हमला किया था जिसके बाद बहुसंख्यक बौद्धों ने सैन्य कार्रवाई और प्रतिहिंसा शुरू की थी जिसके चलते रोहिंग्या लोगों को वहां से भागना पड़ा। म्यामां पर रोहिंग्या मुसलमानों से पीछा छुड़ाने का आरोप लगाने वालों में बांग्लादेश की

प्रधानमंत्री शेख हसीना, संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंतोनियो गुतारेस, संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार प्रमुख जैद राद अल हुसैन और संयुक्त अरब अमीरात सहित कई इस्लामिक देश शामिल थे।

सूआन ने उनके दावों को खारिज किया। उन्होंने कहा, ''वहां कोई जातीय सफाया नहीं हुआ है। कोई नरसंहार नहीं हुआ है। लंबे समय तक स्वतंत्रता और मानवाधिकारों के लिए संघर्ष करने वाले म्यामां के नेता ऐसी नीतियों का समर्थन नहीं करेंगे। हम जातीय सफाए और नरसंहार को रोकने के लिए सबकुछ करेंगे।'' उन्होंने रखाइन मुद्दे को ''अत्यंत जटिल'' बताया और संरा के सदस्य देशों और अंतरराष्ट्रीय बिरादरी से अनुरोध किया कि वे उत्तरी रखाइन में हालात को तटस्थ भाव से और निष्पक्ष ढंग से देखे।

स्वतंत्रता के लिए मतदान में इराकी कुर्द लोगों ने बगदाद को अनसुना किया

अरबिल (इराक) (एजेंसी)।

इराक के कुर्दों ने आजादी संबंधी ऐतिहासिक जनमत संग्रह में हुए मतदान को लेकर व्यापक विरोध को नजरअंदाज किया जिसकी वजह से बगदाद और तुर्की के साथ उसका तनाव बढ़ गया है और अशांति का खतरा उत्पन्न हो गया है। मतदान के लिए उमड़े मतदाताओं में इसे लेकर खासा जोश नजर आया। उत्तरी इराक के स्वायत्त कुर्द क्षेत्र और कुछ विवादित इलाकों में मतदान बाध्यकारी नहीं था और इसके आधार पर सीधे आजादी नहीं मिल जाएगी। लेकिन कुर्द इसे आजादी की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम मानते हैं।

मतदान करने के बाद मतदाता उंगली पर लगे स्याही के निशान को उत्साहपूर्वक दिखाते नजर आए। ऐसा मानना है कि मतदान का परिणाम पक्ष में आएगा। पचास लाख मतदाताओं के लिए मतदान केंद्र अंतरराष्ट्रीय समयानुसार शाम सात बजे बंद हुए थे। परिणाम 24 घंटे के भीतर आ सकते हैं। मतदान शांतिपूर्ण तरीके से हुआ लेकिन आगे मुश्किलें पेश आ सकती हैं। न्यूयॉर्क में संयुक्त राष्ट्र प्रमुख एंतोनियो गुतारेस ने जनमत संग्रह के 'संभावित अस्थिरता लाने वाले प्रभावों' पर चिंता जताई।

उन्होंने 'संप्रभुता, क्षेत्रीय अखंडता तथा इराक की एकता' के प्रति सम्मान जताते हुए कहा कि मतभेदों का समाधान 'व्यवस्थित संवाद तथा रचनात्मक समझौते' के जरिए निकाला जाए। बगदाद ने मतदान को असंवैधानिक घोषित किया है। वहां के सांसदों ने सरकार से जनमत संग्रह वाले इलाकों में जवान भेजने की मांग की थी। इस्तांबुल में तुर्की के राष्ट्रपति रजब तैयब एर्दोआन ने चेतावनी दी कि वह इराक के कुर्दिस्तान के साथ अपनी सीमा बंद कर देंगे और महत्वपूर्ण निर्यात बंद कर देंगे। तुर्की को अंदेशा है कि मतदान का असर उसके यहां मौजूद बड़ी कुर्द आबादी पर पड़ सकता है।

भ्रष्टाचार के मामले में शरीफ पर 2 अक्टूबर को अभियोग लगायेगी अदालत

इस्लामाबाद (एजेंसी)।

पनामा पेपर घोटाले में राष्ट्रीय जवाबदेही ब्यूरो द्वारा अपने खिलाफ दायर भ्रष्टाचार के मुकदमों का सामना करने के लिये पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ मंगलवार को यहां जवाबदेही अदालत के समक्ष पेश हुये। इस मामले में अदालत ने 2 अक्तूबर को शरीफ पर अभियोग लगाने का फैसला किया है। अदालत ने उनके बच्चों और दामाद के खिलाफ भी नया गिरफ्तारी वारंट जारी किया है। लंदन में इलाज करा रही अपनी बीमार पत्नी के पास से कल ही पाकिस्तान लौटे शरीफ आज सुबह न्यायिक परिसर स्थित अदालत में पहुंचे। संक्षिप्त सुनवाई के दौरान 67 वर्षीय शरीफ ने न्यायाधीश मुहम्मद बशीर को सूचित किया कि उनकी पत्नी की तबियत ठीक नहीं थी और उन्हें उनकी देखभाल करने की जरूरत है। इसके बाद उन्हें अदालत से जाने की इजाजत दे दी गयी। इसके बाद अदालत को 10 मिनट के लिये स्थगित किया गया। बाद में सामान्य कार्यवाही फिर शुरू की गयी। यह पेशी महज एक औपचारिकता थी ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि आरोपी मुकदमे का सामना करने के लिये तैयार है। शरीफ करीब 10 मिनट तक अदालत में रहे। शरीफ के साथ उनके वकील ख्वाजा हारिस भी मौजूद थे जो भ्रष्टाचार के मामलों में वकील के तौर पर उनका प्रतिनिधित्व करेंगे। मामले में सुनवाई की अगली तारीख अभी तय नहीं की गयी है। शरीफ परिवार के खिलाफ इस्लामाबाद में जवाबदेही अदालत में भ्रष्टाचार के मामलों में सुनवाई चल रही है। अदालत ने पिछले हफ्ते शरीफ, उनकी बेटी मरियम और दामाद कैप्टन (सेवानिवृत्त) सफदर को 26 सितंबर को उसके समक्ष पेश होने के लिये कहा था। शरीफ परिवार मामले में सुनवाई की अवहेलना करते हुये 19 सितंबर को अदालत में सुनवाई के लिये पेश नहीं हुआ था। मामले में सुनवाई जब फिर से शुरू हुई तब न्यायाधीश ने मरियम, हुसैन, हसन और शरीफ के दामाद सफदर के बारे में पूछा जिन्हें आज पेश होने का आदेश दिया गया था। शरीफ के वकील हारिस ने कहा कि वे अपनी बीमार मां की देखभाल के लिये लंदन में हैं लेकिन अदालत ने उनकी दलील खारिज कर दी और 2 अक्तूबर को उन्हें अदालत के समक्ष पेश होने का निर्देश दिया। अदालत ने मरियम, हुसैन, हसन और सफदर के खिलाफ नये जमानती गिरफ्तारी वारंट जारी किये। हारिस ने अदालत से कहा कि शरीफ को लंदन में अपनी बीमार पत्नी की देखभाल करने की जरूरत है ऐसे में उन्हें अदालत में व्यक्तिगत पेशी से छूट की अनुमति दी जानी चाहिये। अदालत ने इसे यह कहकर खारिज कर दिया कि उन्हें पहले अभियोग के दिन अदालत में पेश होना चाहिये और व्यक्तिगत पेशी से छूट के मामले पर फैसला बाद में होगा। शरीफ के कानूनी सहायक बैरिस्टर जफरुल्लाह खान ने मीडिया को बताया कि अदालत को अभियोग लगाने के लिये और वक्त देना चाहिये था। उन्होंने कहा, ''जब तक सभी आरोपी अदालत में पेश नहीं हो जाते तब तक अदालत अभियोग नहीं लगा सकती। हमें मामले को तैयार करने के लिये और वक्त दिया जाना चाहिये था।'' उन्होंने कहा कि अगली सुनवाई की अवधि के दौरान अगर सबकुछ ठीक रहा और उनकी पत्नी का स्वास्थ्य स्थिर रहा तो शरीफ अगली सुनवाई पर अदालत में पेश होंगे। स्वतंत्र विधि विशेषज्ञ शहजाद अकबर ने कहा कि अगर किसी आरोपी के सहयोगी उपलब्ध नहीं होते या अदालत के समक्ष पेशी से इनकार करते हैं तो अदालत अभियोग को टालने के लिये बाध्य नहीं है।

लंदन में रविवार को यहां रहने वाले जापानी समुदाय के लोगों ने मातसुरी उत्सव मनाया जिसमें लोगों ने सिर्फ जापानी कल्चर को जाना बल्कि खाने भी लुत्फ उठाया। लोग इसमें ट्रेडिशनल कपड़े पहनकर पहुंचे थे।

कांग्रेस की सरकार आई तो सरकार दिल्ली नहीं गुजरात से चलेगी : राहुल

जामनगर। राहुल गांधी ने आज कहा कि राज्य में कांग्रेस की सरकार बनी तो वह दिल्ली के रिमोट कंट्रोल से नहीं बल्कि गुजरात से चलेगी। कांग्रेस उपाध्यक्ष राहुल गांधी ने सौराष्ट्र मंडल की यात्रा के दूसरे दिन आज जामनगर में व्यापारी महासंघ से मुलाकात की। व्यापारियों के साथ जीएसटी और नोटबंदी के बारे में चर्चा की। राहुल गांधी ने व्यापारियों के जीएसटी संबंधी प्रश्नों के बारे में उन्हें ई मेइल करने को कहा।

जामनगर से राजकोट तक राहुल गांधी ने रोड शो किया, जिसमें जगह जगह उनका भव्य स्वागत किया गया। जामनगर से राजकोट जाते हुए राहुल गांधी ने गुलाबनगर क्षेत्र में बस से नीचे उतरकर स्थानीय लोगों से मुलाकात की और उनकी समस्याएं सुनीं। राहुल गांधी ने युवा और किसानों को संबोधित करते हुए कहा कि गुजरात और केन्द्र की भाजपा सरकार किसान विरोधी है। पीएम मोदी ने कपास और मूंगफली के पोषणक्षम मूल्य देने का वादा किया था, जो आज तक पूरा नहीं हुआ। उन्होंने कहा कि गुजरात में कांग्रेस की सरकार आई तो वह दिल्ली से नहीं बल्कि गुजरात से चलेगी। वर्तमान में गुजरात की सरकार दिल्ली से रिमोट कंट्रोल के जरिए चल रही है। राहुल ने कहा कि चौबीसों घंटे 30 हजार नए युवक रोजगार की तलाश में निकलते हैं। जिसमें से मोदी सरकार केवल 40 लोगों को रोजगार देती है। रोजगार वर्तमान की सबसे बड़ी संख्या है और इस मुद्दे पर झूठा वादा कर नरेन्द्र मोदी प्रधानमंत्री बन गए। उन्होंने कहा कि कांग्रेस की सरकार युवाओं को रोजगार मुहैया कराती थी। सरदार पटेल की सबसे ऊंची प्रतिमा लगेगी जो चीन में बनेगी और शर्म की बात है, जिस पर मेड इन चाइना लिखा होगा। राहुल ने कहा कि चीन हमारा प्रतिस्पर्धी है। इसके बावजूद सरदार पटेल की विश्व की सबसे ऊंची प्रतिमा चीन में बनवाई जा रही है। राहुल गांधी ने आरोप लगाया कि गुजरात में महिला, पाटीदार और दलितों पर राज्य सरकार अत्याचार कर रही है। भाजपा सरकार में पाटीदार और दलितों पर काफी अत्याचार हुआ है। गुजरात में जब कांग्रेस की सरकार थी तब सब मिल जुलकर रहते थे। भाजपा सरकार ने पाटीदारों को कुचला और उन पर गोलियां बरसाईं। जिन पाटीदारों ने देश को सरदार दिया उन्हीं पाटीदारों पर अत्याचार किया गया, जो दर्शाता है कि गुजरात मॉडल फेल हुआ है।

जनविकल्प गुजरात की सभी 182 सीटों पर चुनाव लड़ेगी-वाघेला

राजकोट। यहां सर्किट हाउस में आज आयोजित पत्रकार वार्ता में पूर्व कांग्रेसी नेता शंकर सिंह वाघेला ने घोषणा की कि उनकी पार्टी राज्य की सभी 182 सीटों पर अपने प्रत्याशी खड़े करेगी। इसी के साथ उन्होंने अपनी पार्टी जनविकल्प के विधानसभा चुनाव के बारे में विस्तृत चर्चा की।

भाजपा के प्रति लोगों में रोष?

आगामी विधानसभा चुनाव को ध्यान में रखते हुए जनविकल्प के बैनर तले चुनाव लड़ने जा रहा हूं। कुछ लोग कहते हैं कि बापू ने जनविकल्प पार्टी कांग्रेस को नुकसान पहुंचाने के लिए बनाई है। हकीकत यह है कि कांग्रेस 1990 से विधानसभा चुनाव हारती आई है। इसका सीधा मतलब यही है कि तीसरी पार्टी हो या न हो, कांग्रेस हारती ही रही है। इस समय भाजपा के प्रति लोगों में रोष देखने में आ रहा है।

कंडोम के हजारों पेकेट्स के साथ महिलाएं पहुंची कलेक्टर कार्यालय

वडोदरा। कभी-कभी सरकार की कुछ योजनाएं किस तरह से हास्यास्पद रूप ले लेती है, इसका ताजा उदाहरण है कंडोम का वितरण। राज्य में जिस सरकारी कंडोम का वितरण किया जा रहा है, उसमें एक महिला की तस्वीर है और उस पर लिखा है आशा। इसे लेकर राज्य में काम करने वाली आशा कार्यकर्ताओं में भारी रोष है। कंडोम के हजारों पेकेज लेकर सभी आशा वर्कर कलेक्टर कार्यालय पहुंची और अपना विरोध दर्ज किया।

प्रेग्नेंट महिलाओं का रजिस्ट्रेशन, डिलीवरी, बच्चों को पोलिया ड्राप्ट्स आदि तमाम काम करने वाली आशा वर्कर का नाम अब कंडोम के साथ जोड़ दिए जाने के बाद उनके गुस्से का पारावार नहीं रहा। हजारों की संख्या में कंडोम के पेकेट्स लेकर महिलाएं कलेक्टर कार्यालय पहुंच गई। उन्होंने कलेक्टर से मांग की कि इन पेकेट से आशा नाम हटा दिया जाए, इसके बजाए भाजपा-कांग्रेस के नेताओं या स्वास्थ्य अधिकारियों के नाम लिखे जाएं। सरकार जब तक हमारी इस मांग को स्वीकार नहीं करती, तब तक हमारा विरोध जारी रहेगा।

होता है आशा वर्करों को आर्थिक शोषण

आशा वर्करों की नेता हर्षा बेन मांडे ने बताया कि आशा

आमिर खान ने की मां दुर्गा की आरती, खाया गुजराती खाना, देखा गरबा

वडोदरा (गुजरात). फिल्म 'सीक्रेट सुपरस्टार' फिल्म का प्रमोशन करने वडोदरा आए आमिर खान ने नवलखा मैदान पर एक पांडाल में दुर्गा मां की आरती उतारी। पांडाल में आरती कर रहे आमिर खान की एक झलक पाने और फोटो खींचने वालों की भारी भीड़ लगी रही। आमिर नवलखा मैदान पर हो रहे गरबा में भी शामिल हुए। लिया गुजराती खाने का टेस्ट...

– आमिर ने गुजराती खाने का टेस्ट लिया। गुजराती थाली चखने के लिए आमिर होटल पहुंचे जहां पारंपरिक व्यंजनों से भरी थाली को परोसा गया।

– नवरात्रि के इस मौके पर आमिर वडोदरा के नवलखी ग्राउंड में नवरात्रि फेस्टिवल सेलिब्रेट करने पहुंचे।

– यहां पंडाल में गरबा खेलने के लिए काफी ज्यादा तादाद में भीड़ मौजूद थीय आमिर ने भी यहां लोगों के साथ खूब इंज?वॉय किया। साथ ही लोगों को नवरात्रि की भी बधाइयां दी।

सीक्रेट सुपरस्टार में मेंटर की भूमिका में हैं आमिर

– बता दें कि इस फिल्म में 'दंगल' फेम जायरा वसीम की मुख्य भूमिका है। आमिर उनके मेंटर के किरदार में हैं। ये फिल्म दिवाली पर रिलीज होगी। पोस्टर में एक टैग लाइन भी है - ड्रीम देखना तो बेसिक होता है। इस फिल्म की कहानी एक युवा सिंगर की है, जिसकी पहचान एक बहुत बड़ा सीक्रेट है। यह एक ऐसी लड़की के सफर की दास्तान है, जो अपने सपनों को पूरा करना चाहती है। पोस्टर में जायरा स्कूल ड्रेस पहने हुए नजर आ रही हैं। इसके अलावा एक्ट्रेस के बैग में लगा हुआ माइक्रोफोन भी देखा जा सकता है। ऐसा क्यों है, यह तो फिल्म देखने के बाद ही पता चलेगा। बता दें कि फिल्म आमिर खान के प्रोडक्शन हाउस तले बन रही है. किरण राव फिल्म की प्रोड्यूसर हैं।

हार्दिक पटेल के 'हाथ' आने के बाद अब जिग्नेश-अल्पेश पर कांग्रेस की नजर

अहमदाबाद। गुजरात विधानसभा चुनाव में कांग्रेस को समर्थन देने के हार्दिक पटेल के खुले संकेतों को बड़ी सियासी कामयाबी मान रही पार्टी ने अब सूबे के ओबीसी और दलित समाज के नेताओं को भी साथ लाने की पहल तेज कर दी है। गुजरात चुनाव से जुड़े कांग्रेस के रणनीतिकारों की टीम अब ओबीसी समुदाय के युवा नेता अल्पेश ठाकुर और सूबे में दलित नेतृत्व के नए चेहरे के रूप में सामने आए जिग्नेश मेवानी से संवाद कर रही है। इस तरह गुजरात चुनाव में भाजपा को कड़ी टक्कर देने के लिए कांग्रेस इस बार सूबे के सामाजिक समीकरणों को दुरुस्त करने में बड़ा दांव लगाने की तैयारी कर रही है। बता दें कि कांग्रेस दो दशक से गुजरात की सत्ता से बाहर है। पटेल समुदाय जाहिर तौर पर गुजरात में भाजपा की बड़ी ताकत रहा है, पर अब हार्दिक के सहारे कांग्रेस इस प्रभावशाली समुदाय के अपने साथ आने की उम्मीद कर रही है। पार्टी के रणनीतिकारों ने राहुल के दौरे से पहले हार्दिक से उनकी यात्रा का स्वागत करने की घोषणा के लिए पर्दे के पीछे काफी मेहनत की थी। गुजरात के प्रभारी पार्टी महासचिव अशोक गहलोत और कांग्रेस अध्यक्ष के राजनीतिक सलाहकार अहमद पटेल के अलावा राज्य के वरिष्ठ नेता हार्दिक समेत अन्य समुदायों के प्रभावशाली नेताओं का समर्थन जुटाने की कोशिश में लगे हैं। सूबे में ओबीसी के हितों की मुखर रूप से आवाज बुलंद कर रहे अल्पेश इस समय चतुर सियासी दांव खेल रहे हैं। सत्तारूढ़ भाजपा पर दबाव बनाने के लिए वे कांग्रेस के साथ रिश्तों का दरवाजा खोले रखने का संकेत दे रहे। बहरहाल, अल्पेश नौ अक्टूबर को अपने कार्यक्रम में गुजरात चुनाव की अपनी राजनीतिक दिशा पर तस्वीर साफ करेंगे। हार्दिक के रुख के बाद अल्पेश पर भी कहीं न कहीं सत्ता विरोधी खेमे में आने का दबाव है। हालांकि कांग्रेस के रणनीतिकार अल्पेश के साथ आने को लेकर अभी पूरी तरह से आश्वस्त नहीं हैं। मगर पार्टी दलित समुदाय के सबसे ताकतवर चेहरे के रूप में उभरे जिग्नेश मेवानी को लेकर काफी सकारात्मक है। पार्टी नेताओं का मानना है कि ऊना में दलित उत्पीड़न की घटनाओं के बाद जिग्नेश ने जिस तरह राज्य सरकार और भाजपा की सियासत के खिलाफ आवाज बुलंद की है।

स्कूल से निकाले गए स्टूडेंट ने छत से लगाई मौत की छलांग

अहमदाबाद। लड़की से छेड़छाड़ के मामले पर प्रिंसिपल के बेटे से झगड़ा होने पर राजस्थान के अजमेर के पास किशनगढ़ की बिरला इंटरनेशनल स्कूल से निकाले गए दसवीं के स्टूडेंट ने फ्लैट की छत से मौत की छलांग लगा दी। छात्र अपने दादा-दादी के साथ नारणपुरा के अमीकुंज चौराहे के पास सुफलाम में रहता था। सुसाइड के पहले अपने पापा को फोन किया?

सुफलाम फ्लैट में रहने वाले विशाल राजेंद्र कुमार भराडिया(15) ने सुसाइड के पहले नाइजीरिया में रहने वाले अपने पापा को फोन पर कहा था कि मैं दुनिया छोड़कर जा रहा हूं। उसके दादा-दादी जब उसे ढूंढते हुए छत पर पहुंचे, तो उन्होंने अपनी आंखों के सामने पोते को छत से कूदते हुए देखा। पुलिस ने घटनास्थल पर पहुंचकर मौके पर मुआइना किया। आगे जांच शुरू कर दी है।

विशाल के दादा प्रकाशचंद्र ने पुलिस को बताया कि उनका बेटा राजेंद्र सीए है, इस समय वह नाइजीरिया में पत्नी और 12 साल की बेटी के साथ रहता है। पोता विशाल किशनगढ़ की बिरला इंटरनेशनल स्कूल में कक्षा दसवीं का छात्र था। स्कूल के प्रिंसिपल संजय तिवारी हैं और वाइस प्रिंसिपल उनकी पत्नी हैं। उनका बेटा समन्वय विशाल के साथ पढ़ता था।

अभिनेत्री पूजा झवेरी ने रंगत जमाई, लोगों के बीच आकर खेला डांडिया

वलसाड। यहां के गोकुल ग्रुप द्वारा आयोजित गरबी में एक्ट्रेस पूजा झवेरी उपस्थित थी। उनके साथ खेलैयों ने जमकर डांडिया खेला। पूजा के ठुमके ने लोगों को खुश कर दिया। अभिनेत्री के साथ रास-गरबा करना युवाओं को अच्छा लगा। अब पूरे वलसाड जिले में नवरात्रि की रौनक दिखाई देने लगी है।

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक व प्रकाशक सुरेश मौर्या द्वारा 4 ओ-ब्लाक आगम नवकार कॉम्पलेक्ष सचीन रेल्वे स्टेश के पास,सूरत, जि. सूरत, गुजरात से प्रकाशित, एवं तासीलोक पब्लिकेशन 152,153 श्री राम इंडस्ट्रीयल एरिया पांडेसरा सूरत 394210 से मुद्रत, फोन नं. 9879141480 संपादक सुरेश मौर्या (पी आर बी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए उत्तरदायी) E-mail: krantisamay@gmail.com